प्रथम सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों !! आज की कहानी में हम जानेंगे कि किस प्रकार एक तेजस्वी कन्या के तप के प्रभाव से भगवान नारायण के वाहन गरुड़ जी और गालव ऋषि गलने लग गए और राजस्थान में गलतातीर्थ बना ?

फिर संस्कृति सुवास में हम जानेंगे कि भारतीय संस्कृति में गलताजी तीर्थ का क्या महत्त्व है ? योगासन में हम जानेंगे भगवान शिव और पूज्य बापूजी का प्रिय आसन कोन-सा है ? गतिविधि में हम सीखेंगे संस्कृत । इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञानं प्रतियोगिता, कीर्तन, खेल, प्राणायाम, और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे पावन सत्संग ।

तो आइए, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते हैं आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

शिखा स्पर्श : सभी बच्चे शिखा के स्थान पर हाथ लगाकर मंत्र उच्चारण करेंगे -

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।

यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ ॐ

(हे विश्व के देव ! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों को दूर करें, और ब्रह्माण्ड में जो भी कल्याणकारक, शुभ गुण, कर्म, स्वभाव, सुख हैं वो हमें प्राप्त हों ।)

अब सभी बच्चे करेंगे “ॐकार” गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM

(2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें ।)

3. आओ सुनें कहानी

गलता तीर्थ की कहानी

बहुत समय पहले राजस्थान की अरावली पहाड़ियों के बीच एक शांत और सुंदर वन था। वहीं एक महान तपस्विनी तप करती थीं, जिनका नाम था शांडिलिनी। वर्षों तक उन्होंने अन्न और जल का त्याग करके ध्यान किया। उनकी तपस्या इतनी प्रबल थी कि उसकी दिव्य आभा तीनों लोकों तक पहुँच गई।

एक दिन महान ऋषि गालव और भगवान गरुड़ वहाँ से गुज़रे। उन्होंने शांडिलिनी की अद्भुत तपस्या देखी और बहुत प्रभावित हुए।

गरुड़ जी ने कहा, "ऋषिवर, ऐसी भक्ति तो बहुत दुर्लभ है। ये तो भगवान विष्णु की पटरानी बनने के लायक है।"

दोनों ने शाण्डिली से कहा,

"शांडिलिनी, तुम्हारी भक्ति और तपस्या अत्यंत सराहनीय है। हम चाहते हैं कि तुम विष्णुजी की पटरानी बनकर वैकुण्ठ में रहो।"

शांडिलिनी ने हाथ जोड़कर विनम्रता से उत्तर दिया,

“मुझे किसी पद या सम्मान की इच्छा नहीं है। मैं तो केवल भक्त बनकर तपस्या करके भगवान् को आत्मरूप से जानना चाहती हूँ।"

गालवजी और गरुडजी ने उसे बहुत समझाया, लेकिन शांडिलिनी अपने निर्णय पर अडिग रहीं।

फिर गालवजी और गरुडजीने उसे जबरजस्ती अपने साथ ले जाने का प्रयास किया, तब शांडिलिनी ने कहा,

"यदि मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे ले जाने का प्रयास किया जाएगा, तो हे गालव ऋषि! आपकी देह गलने लगे।"

ऐसा कहते ही शाप का प्रभाव दिखाई देने लगा। ऋषि गालव की देह गलने लगी।

यह देखकर दोनों ने तुरंत शांडिलिनी को शांत किया और कहा,

"देवी ! हमें माफ़ कर दीजिये । हमारी वजह से आपकी तपस्या में विघ्न हुआ ।"

इसी घटना के बाद उस स्थान का नाम "गलता" पड़ गया और इस घटना की स्मृति में प्रसिद्ध हुआ। समय बीतता गया। वहाँ पवित्र कुंड बने, मंदिर बने और यह स्थान एक प्रसिद्ध तीर्थ बन गया। आज भी श्रद्धालु गलता तीर्थ में स्नान करके भगवान का स्मरण करते हैं और शांडिलिनी की अटूट भक्ति को याद करते हैं।

4. भजन / पाठ

आज हम विशेष भजन गायेंगे -

वीर बनो, गंभीर बनो... !!

https://youtu.be/fhMaa7m-MCo

5. ज्ञान का चुटकुला

मां ने पूछा -‘बेटी तुझे कैसा ससुराल चाहिए’ ?

पिंकी - मुझे ऐसा ससुराल चाहिए जहां अनलिमिटेड वाई-फाई की सुविधा हो।

सीख - बिन जरूरी सोशल नेटवर्किंग और इंटरनेट स्ट्रीमिंग से बचना चाहिए।

6. संस्कृति सुवास :-

गलता तीर्थ

राजस्थान जयपुर से लगभग 10 किमी पूर्व में अरावली पहाड़ियों के बीच गुलाबी बलुआ पत्थर से बने विशाल परिसर में गलता तीर्थ बसा है । यह तीर्थ अपने प्राकृतिक झरने, पवित्र कुंड, खूबसूरत घाटियों और खाड़ी से घिरे पहाड़ी क्षेत्र के मध्य में यह मंदिर तपस्या और आध्यात्मिकता का केंद्र है । इसके प्राकृतिक सौंदर्य, सजावटी गलियारे, रंग-बिरंगी चित्रकारी, चारों ओर हरियाली और ऐतिहासिक महत्व के कारण भारत

सरकार ने इस स्थान को सांस्कृतिक विरासत का दर्जा दिया है। कहा जाता है, इस मंदिर का नाम संत गालब के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने यहां सौ वर्षों तक तप किया था। उनकी भक्ति के कारण भगवान ने इस स्थान को प्रचुर मात्रा में जल रहने का आशीर्वाद दिया। इसी कारण राजस्थान में जल कि कमी होने पर भी यह सूखता नहीं है। यहाँ गौमुख नामक एक चट्टान जो गाय के सिर के आकार की है वहां से स्वच्छ और शुद्ध जल निरंतर कुंड में बहता रहता है। बाद में शांडिली नामक कन्या ने यहाँ तप किया था । (क्रमश:)

7. योग

पाद-पश्चिमोत्तनासन

बच्चों, आज हम आपको एक ऐसा योगासन बता रहे हैं जिसका रोज अभ्यास करने से करने से सुषुम्ना का मुख खुलता है, व्यक्ति तेजस्वी और चित्त शांत होता है। पेट, छाती, मेरूदण्ड को उत्तम कसरत मिलती है अतः वे अधिक कार्यक्षम बनते हैं। हाथ, पैर तथा अन्य अंगों के सन्धि स्थान

मजबूत बनते हैं। इस आसन पेट के सभी रोग, कमर दर्द, हिचकी, मूत्ररोग, मधुमेह, पैर के रोग, एपेन्डीसाइटिस, अनिद्रा, दमा, बेलता, बवासीर, बौनापन आदि अनेक रोग दूर होते हैं। कफ और चरबी नष्ट होते हैं। इस आसन से शरीर का कद बढ़ता है। चिन्ता एवं उत्तेजना शांत करने के लिए यह आसन उत्तम है। यह आसन भगवान शिव को बहुत प्यारा है।

पाद पश्चिमोत्तानासन पूज्य गुरुदेव को भी बहुत प्यारा है। उससे पूज्यश्री को बहुत लाभ हुए हैं। अभी भी यह आसन उनके आरोग्यनिधि का रक्षक बना हुआ है।

विधिः बिछे हुए आसन पर बैठ जायें। दोनों पैरों को लम्बे फैला दें। दोनों पैरों की जंघा, घुटने, पंजे परस्पर मिले रहें और जमीन के साथ लगे रहें। पैरों की अंगुलयाँ घुटनों की तरफ झुकी हुई रहें। अब दोनों हाथ लम्बे करें। दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगूठे से दाहिने पैर का अंगूठा और बायें हाथ की तर्जनी और अंगूठे से बायें पैर का अंगूठा पकड़ें। अब रेचक करते-करते नीचे झुकें और सिर को दोनों घुटनों के मध्य में रखें। ललाट घुटने को स्पर्श करे और घुटने ज़मीन से लगे रहें। प्रारम्भ में आधा मिनट करके क्रमशः 15 मिनट तक यह आसन करने का

अभ्यास बढ़ाना चाहिये। प्रथम दो-चार दिन कठिन लगेगा लेकिन अभ्यास हो जाने पर यह आसन सरल हो जाएगा।

8. श्लोक :-

ॐकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः॥

अर्थ :- योगीजन (योगी) सदैव उस ॐकार का ध्यान करते हैं जो बिन्दु (नाद या चंद्रबिंदु) से संयुक्त है। वह ॐकार सभी मनोकामनाओं (कामदं) को पूर्ण करने वाला और मोक्ष (मुक्ति) प्रदान करने वाला है। ऐसे ॐकार स्वरूप भगवान को हम बारंबार नमन करते हैं।

9. गतिविधि

आईये अब सीखते हैं, "संस्कृत" । आज हम जानेंगे कि संस्कृत में अव्यय (Indeclinable Words) के साथ वाक्य कैसे बनाते हैं । अव्यय वे शब्द होते हैं जो लिंग, वचन, कारक

या काल के बदलने पर भी कभी नहीं बदलते (यानी अपरिवर्तनीय रहते हैं) । जैसे - यहाँ, वहाँ, कहाँ, जब, कब, तब, हमेशा आदि । ये संस्कृत के स्थान अव्यय शब्द हैं जिनका रूप कभी नहीं बदलता है ।

- अत्र का प्रयोग किसी नजदीक वस्तु या व्यक्ति के लिए किया जाता है जैसे : -

अत्र पुस्तकम् अस्ति। (पुस्तक यहाँ है।)

- तत्र का प्रयोग किसी दूर की वस्तु या व्यक्ति के लिए किया जाता है ।

जैसे : - बालक: तत्र अस्ति। (बालक वहाँ है।)

- सर्वत्र का प्रयोग किसी व्यापक वस्तु के लिए किया जाता है जैसे :-

ईश्वरः सर्वत्र अस्ति। (ईश्वर हर जगह है।)

- कुत्र (कहाँ) यह प्रश्नवाचक शब्द है, जिसका प्रयोग किसी स्थान का पता लगाने या पूछने के लिए किया जाता है जैसे सुरेश: कुत्र अस्ति ? - सुरेश कहाँ है?
- अन्यत्र का प्रयोग किसी दूर स्थित व्यक्ति या वस्तु के लिए किया जाता है

जैसे :- हरिश अन्य जगह है । - हरिश: अन्यत्र अस्ति ।

10. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है । प्रश्न है,-

“वेदव्यासजी ने किनकी सलाह से श्रीमदभागवत की रचना की थी?” - विकल्प है -

(A) ब्रह्मा जी

(B) नारदजी

(C) गणेश जी

(D) ऋषि पारासर जी

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम सभी श्री आशारामायणजी की पंक्तियां दोहराएंगे । https://youtu.be/bl57Gh3T4ps (कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे-
शाण्डिलीनी की ओमकार उपासना से सामर्थ्य प्राप्ति ...
https://youtu.be/uT-YdxkI4wY

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- शांडिली क्या कर रही थी ?
- गालव और गरुड़ क्यों गलना शुरू हो गए?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
- गलता तीर्थ हमारी सांस्कृतिक विरासत क्यों है?
- गलता तीर्थ का जल सूखता क्यों नहीं है?
- गलता कुंड क्यों सबसे पवित्र है?

- पश्चिमोत्तनासन से क्या लाभ होता है?
- पश्चिमोत्तनासन कैसे किया जाता है?
- संस्कृत में अव्यय क्या होते है? उदाहरण दें ।
- आज के सत्संग से आपको क्या सीख मिलती है?

14. पूर्णाहूति

आरती - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

नारायण नारायण नारायण नारायण।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ!!!

दीपज्योति एवं आरती -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है - [b]. वेदव्यासजी ने नारदजी सलाह से लोगों में भक्ति भाव जगे इस उद्देश्य से श्रीमदभागवत की रचना की थी।

****

दूसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका) :-

हरि ॐ बच्चों, आज की कहानी में हम जानेंगे कि किस प्रकार कुसंग के प्रभाव एक महान राजा की रानी की बुद्धि भ्रष्ट हो गई और सत्संग के प्रभाव से मंत्री ने रावण से भी कर वशुल कर लिया ! फिर हम जानेंगे कि जीवन में संग क्या प्रभाव होता है?

संस्कृति सुवास में हम जानेंगे कि कब और किस स्थान पर जप करने से कितना लाभ होता है? स्वास्थ्य सुरक्षा में हम जानेंगे कि आलू और आलू के चिप्स खाने से क्या नुकसान होता

है? इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता, कीर्तन, खेल, प्राणायाम, योगासन और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे पावन सत्संग ।

तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क में रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती फुर्ती मे मदद मिलेगी ।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे । त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।
https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ सुनें कहानी :-

कुसंग का प्रभाव

बच्चों, रावण के समकालीन एक बड़े उच्च कोटि के सम्राट चक्वेण हो गये । वे राज्य का मंगल चाहते थे । राज्य तो छोटा-सा था लेकिन प्रभाव इतना था कि उनकी सराहना स्वर्ग में भी होती थी । एक दिन कुछ मनचली माइयाँ, सेठानियाँ गहने-गाँठे पहनकर महारानियाँ बन के राजा चक्ववेण की पत्नी के दर्शन करने को आयीं । उन्होंने देखा कि रानी साहिबा की साड़ी तो हाथ से कांती हुई रूई के कपड़े की है और घर में भी सादा-सूदा भोजन बनता है ।

मनचली माइयाँ रानी से बोलीं- "तुम्हारे पास तो गहने गाँठे, हार, सिंगार कुछ भी नहीं ! हमारे नौकरों के घर से भी तुच्छ ! तुम्हारे घर में... ऐसे बर्तन, ऐसे कपड़े... !"

एक सेठानी ने कहाः "हम तो नौकरानियों को भी ऐसे कपड़े पहनने नहीं देतीं !"

दूसरी ने साथ आयी अपनी नौकरानी की ओर संकेत करते हुए कहाः "इसके कपड़े देखो, और महारानी ! आपके कपड़े देखो ।"

तीसरी ने अपनी नौकरानी की सहेली जो गहने-गाँठे वाली थी, उसकी ओर संकेत करते हुए कहाः "यह हमारी नौकरानी की सहेली है, इसको भी हम ठीक-ठाक रखते हैं और तुम महारानी... तुम्हारा पति तुमको ऐसा नौकरानी से भी गया-बीता रखता है । (दुःख व्यक्त करते हुए) ऐ हे ! आप क्या क्या सहन कर रही हो ! कब तक सहोगी ? माता जी ! हमें बड़ा दुःख होता है ।"

माता जी जरा भोंदू थी, बुद्धु थी । ऐसा नहीं कि 'सुनाने वाले बुद्धु बना रहे हैं' यह समझकर उनका मुँह बन्द करा दे। तो वे मनचली माइयाँ चक्ववेण राजा की पत्नी को ऐसा तो बहका गयीं कि वह सचमुच सोचने लगी कि 'हमारे पति तो सारा जीवन हमको 'मितव्ययिता-मितव्ययिता' बोलते रहते हैं । ये तो सेठानियाँ हैं और मैं रानी हूँ । इनकी दासियों से भी मेरी

हालत बुरी ! सचमुच, आज तक मेरे पति के प्रभाव में रहकर मैं कुछ बोलती नहीं थी, ये लोग तो सुखी हैं और मैं दुःख देख रही हूँ ।'

चक्ववेण राजा की पत्नी को वे पापिनियाँ ऐसा भिड़ा के गयीं कि उसकी शांति भंग हो गयी, साधुपुरुष की पत्नी और एक नौकर की औरत से भी ज्यादा नीचे गिर गयी । नौकरों की पत्नियाँ कितना कष्ट सहती हैं और खुश रहती हैं किंतु जो चक्ववेण राजा साधु थे, प्रसिद्ध थे और उनकी जिस पत्नी को लोग माता जी-माता जी करके आदर देते थे, वह माई इतनी दुःखी हो गयी कि नौकर की औरत से भी गयी-बीती हो गयी । शब्दों का कैसा प्रभाव ! निंदा कितना खतरनाक जहर है ! दोष-दर्शन अपना कितना अकल्याण कर देता है !

पति चक्ववेण आये और उसको उदास देखकर बोलेः "क्या बात है, आज उदास हो ?"

बोलीः "बस, हमारा भाग्य भगवान ने ऐसा बना दिया ! अब बुढ़ापा थोड़ा बीत जायेगा... ।" सिसक-सिसक के रोने लगी.

"अरे ! तेरे को इतना दुःख ! ऐसी विपदा कहाँ से आयी ?"

"देखो, विधाता ने हमारे जीवन में विपदा ही लिखी है !"

"आज तक तो पूजी जा रही थी, इतने लोग तेरे को 'माता जी-माता जी', राजमाता' कहते हैं... ।"

वह रोती हुई बोलीः "इससे क्या होता है ! मेरा तो नौकरानी जितना भी आदर नहीं । अरे, सेठानियों की नौकरानी की सहेली – कुमड़ी को मैंने देखा, उसके कपड़े भी अच्छे थे और मेरे को ये देखो... मैं तो उससे भी गयी बीती हूँ ! मैं तो सारा जीवन सहती रही, बाकी थोड़े दिन हैं, बुढ़ापे में सह लूँगी... ।"

चक्ववेण ने देखा कि इसको बुद्धि भ्रष्ट करने वाली अभागिनियाँ मिल गयी हैं । चक्ववेण ने बड़ा परिश्रम किया तो बाई ने सारी बातें बता दीं । उन्होंने कहाः "अच्छा तो तुमको अब ठीक-ठाक कपड़े चाहिए, गहने-गाँठे चाहिए !"

बोलीः "अब क्या ! थोड़ा सा जीवन है, यूँ ही मर जाऊँगी ।"

"नहीं-नहीं । किंतु देखो, यह प्रजा का पैसा है, प्रजा की धरोहर है । अधर्म तो हम नहीं कर सकते हैं पर एक उपाय है ।" फिर राजा ने मंत्री को बुलाया और कहाः "तुम्हारी माता जी के गहने-गाँठे और कपड़े के लिए मुझे धन चाहिए । अपने लिए प्रजा पर कर डालना यह राजा के लिए उचित नहीं है । प्रजा तो अपने आश्रित है । आश्रित का शोषण करके, उन पर कर डाल के राजा भोग विलास करे या रानी को ऐश कराये तो नरक में जाय ।

मंत्री ! सुनो, रावण बलवान है । तुम जाओ, उसे कह दो चक्रवेण राजा की आज्ञा है कि ‘सवा मन सोना दे दो । और दया-धर्म में नहीं, दान में नहीं... तुम कभी-कभी हमारे राज्य से उड़ान भरते हो, उसका तुम पर कर डाला जाता है ।"

(ब्रह्मज्ञानी के नाम की दुहाई का प्रभाव)

मंत्री गया और राजा चक्रवेण का संदेशा सुनाया तो रावण ‘ हा हा हा हा हा....!’ करके खूब हँसा, बोलाः "मुट्ठीभर लोगों के एक छोटे से राज्य, तहसील भी न बने इतने लोगों का अगुआ राजा चक्रवेण और सम्राट रावण पर कर ! हा हा हा हा.... ! अच्छी सुनायी ! बहुरत्ना वसुन्धरा । धरती पर कई रत्न पड़े हैं ।

मंत्रीः "महाराज ! राजा की आज्ञा मैंने आपको सुनायी है । आप चक्रवेण जी को साधारण न समझिये और आप यदि लंका की सुरक्षा चाहते हो तो सवा मन सोना दिलवा दीजिये, नहीं तो फिर राजा चक्रवेण की दुहाई से कुछ भी हो सकता है !"

"क्या मतलब ? अच्छा जाओ ! क्या हो सकता है जरा दिखाना ।"

"अच्छा महाराज !"

मंत्री समुद्र-तट पर चला गया । रातभर उसने मिट्टी-विट्टी इकट्ठी कर के, पीले फूल-वूल लाकर थोड़े रगड़-वगड़ के सोने की लंका दिखे ऐसा नमूना बनाया और रावण के पास जा के कहाः "महाराज ! मैं आपको एक कौतूहल दिखाना चाहता हूँ । आप समुद्र-तट पर चलिये ।"

रावण सभासदों सहित वहाँ गया ।

मंत्री ने कहाः "मैंने लंका का नमूना तैयार किया है । यहाँ नमूने की लंका के पूर्व-द्वार के कँगूरों (शिखरों) को गिराऊँगा तो वहाँ तुम्हारे पूर्व-द्वार के कँगूरे गिरते दिखेंगे । भवन को यहाँ तोड़ूँगा तो वहाँ तुम्हारा भवन धराशायी होगा ।

चक्ववेण राजा को आप क्या समझते हो ! वे ब्रह्म-परमात्मा से एकाकार हुए साधुपुरुष हैं ! राजा हैं लेकिन ब्रह्मज्ञानी राजा हैं । ब्रह्मज्ञानी की निंदा करने वाले का पुण्य और प्रसन्नता नष्ट हो जाते हैं, बुद्धि मारी जाती है और ब्रह्मज्ञानी की सेवा करने वाले की प्रसन्नता, पुण्य और बुद्धि का विकास होता है महाराज !"

रावण ने कहाः "तुम्हारे चक्ववेण राजा के नाम की दुहाई से...!"

"हाँ महाराज !"

मंत्री ने तनिक चिंतन किया चक्ववेण राजा का । 'ॐ श्री परमात्मने नमः.... ' करके थोड़ा शांत होकर संकल्प कियाः "चक्ववेण राजा की दुहाई से पूर्व द्वार के कँगूरे गिर जायें ।"

मंत्री ने नमूने के पूर्व-द्वार के कँगूरे गिराये तो असली लंका के पूर्व द्वार के कँगूरे गिर गये !

मंत्री ने कहाः "महाराज ! राजा चक्ववेण की दुहाई से लंका नष्ट करने के लिए मैं अकेला ही काफी हूँ ।"

रावण ने कहाः "भाई ! तू चुपचाप सवा मन सोना ले जा । किसी को बताना नहीं ।"

(सत्संग का प्रभाव, रानी का मिटा कुभाव)

मंत्री सोना लेकर गया और रानी के सामने राजा के चरणों में रखा । रानी को बड़ा आश्चर्य हुआ, बोलीः "इतना बड़ा सम्राट लंकेश ! और सवा मन सोना हमारे राजा साहब के नाम से दे देता है !"

मंत्री ने कहाः "नहीं माता जी ! पहले तो नहीं दे रहा था और मान रहा था । इसलिए मैं ज्यादा खड़ा नहीं रहा और मैंने

जाकर सोने की लंका का नमूना बनाया और रावण को बुलाया..." और क्या-क्या किया वह सारी बात सुना दी ।

मंत्री की बातें सुनीं तो रानी पति के चरण पकड़कर माफी माँगती है कि "देव ! मुझे यह बाहर का सोना, गहने-गाँठे, हीरे नहीं चाहिए, मुझे तो आप हीरों-के-हीरे, गहनों के गहने' पतिरूप में मिले हैं, मैं भाग्यशाली हूँ । न जाने मेरी कैसी विलासी माइयों से बातचीत हुई और मेरी बुद्धि बिगड़ी महाराज ! अब मैं आपकी बुद्धि की शरण आती हूँ, मुझे क्षमा करें !"

राजा ने पत्नी को सत्संग की दो बातें सुनायीं । अपना बल-बुद्धि, योग्यता दूसरों के दुःख मिटाने के लिए है, आपको सुख के लिए कुछ नहीं चाहिए ।

मंत्री सवा मन सोना फिर वापस ले गया और रावण को कहाः "राजा साहब की पत्नी को विलासी माइयों के कुसंग से कुविचार उत्पन्न हुए थे और राजा का सत्संग मिलने से सुविचार आये । बाहर के गहने-गाँठों से सुखी होने की बेवकूफी अब छूट गयी है, अंतरात्मारूपी हीरे से वे प्रसन्न हो गयीं । इसलिए राजन् ! सवा मन सोना आप वापस ले लीजिये ।"

लंकेश देखता ही रह गया कि 'हद हो गयी ! ऐसे पुरुषों के कारण ही पृथ्वी चल रही है ।' सभी बच्चे जोर से बोलेंगे श्री सदगुरुदेव भगवान की जय....

4. ज्ञान का चुटकुला :

टीचर: पप्पू, ड्राइवर और कंडक्टर में क्या फर्क होता है?

पप्पू: सर, कंडक्टर सो गया तो किसी का टिकट नहीं कटेगा, लेकिन ड्राइवर सो गया तो सबका टिकट कट जाएगा!

सीख - अपने से बड़ों को सोच समझकर, सही और युक्ति युक्त जवाब देना चाहिए । हमउम्र के दोस्तों के साथ मजाक कर सकते हैं ।

5. दोहा :-

कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसो ही फल दिन।।

सत्संग सेवा साधना, सत्पुरुषों का संग।
ये चारों करते तुरंत, मोह निशा का भंग ।।

6. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की ।

आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है,- "रामायण के अनुसार रामजी के पैर लगाने से कौन पत्थर से नारी रूप में बदल गयी?" विकल्प है -

[A] शबरी

[B] अनसुइया

[C] अहिल्या

[D] अदिति

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

7. गतिविधि

❖ आज हम जानेंगे कि संस्कृत में अव्यय (Pronoun) के साथ वाक्य कैसे बनाते हैं? आज यदा, कदा, तदा, सदा आदि अव्ययों का हम वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार करेंगे ।

यदा = जब

कदा = कब

तदा = तब

सदा = हमेशा

- ज़ब मैं आता हूँ तब तुम सोते हो...! - यदा अहं आगच्छामि तदा त्वं स्वपिषि ।
- वह विद्यालय कब जाता है ? - स: कदा विद्यालयं गच्छति ?
- मैं हमेशा सत्य बोलता हूँ । - अहं सदा सत्यं वदामि ।

यह सीखने के बाद सभी छात्र दो दो के ग्रुप में खड़े होकर एक एक दूसरे से पूछेंगे कि हिंदी के अमुक वाक्य को संस्कृत में कैसे बताते हैं ?

8. संस्कृति सुवास :-

“गलता तीर्थ”

(गतांक से आगे) गलता तीर्थ उत्तरी भारत का पहला वैष्णव रामानंदी पीठ है। इस मंदिर में संत नाभादास जी का भी मंदिर है, इसी स्थान पर संत नाभादास जी ने गोस्वामी तुलसीदास से भेंट की थी, यहाँ तुलसीदास जी रामचरितमानस की कुछ पंक्तियाँ भी लिखी थी। पहाड़ी की चोटी पर एक सूर्य मंदिर स्थित है जो सूर्य देवता को समर्पित है। यह स्थान सकारात्मक ऊर्जा, प्रेरक आकर्षण और ऊर्जावान वातावरण से परिपूर्ण है। यहाँ एक प्राकृतिक मीठे पानी का झरना और सात पवित्र कुंड हैं। कुंडों में हमेशा जल बहता रहता है। सभी कुंडों में गलता कुंड सबसे पवित्र है। इसमें शुद्धिकरण के गुण हैं। तीर्थयात्री यहां पवित्र जल में स्नान करने के लिए आते हैं। विशेषकर मकर संक्रांति, एकादशी और पूर्णिमा जैसे पवित्र दिनों

में हजारों लोग आध्यात्मिक रूप से शुद्ध होने के लिए आते इस तीर्थ स्थान पर आते हैं।

9) भजन :-

अब सभी बच्चे गाएंगे प्यारा सा भजन -

दुनिया की क्या परवाह करना प्याली राम नाम की पी...!

https://youtu.be/ws0xa9K7iI8

10) परिप्रश्नेन :-

जीवन में संग क्या प्रभाव होता है?

देखा बच्चों, आज की कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है कि निगुरे लोगों से संग से अच्छे लोगों कि बुद्धि भी मलिन हो जाती है और वो गलत निर्णय करने लगते है, जिससे अपने साथ पुरे कुल समाज की हानि होती है। जबकि सत्संगी

लोगों के संग से बुद्धि, कीर्ति, सद्गति, ऐश्वर्य सब सहज हो जाता है। इसलिए यत्न पूर्वक उत्तम संग ही करना चाहिए।

संग चाहे पुण्य का हो या पाप का उसका प्रभाव जरूर पड़ता है। पापियों के संग का रंग जल्दी लग जाता है, लेकिन उसका असर गहरा नहीं होता है, जबकि संतों के संग का रंग जल्दी नहीं लगता और जब लगता है तो उसका असर गहरा होता है। जो लोग स्नान-दान, पुण्यादि करते हैं, सत्कर्म करते हैं उनको संतों की संगति मिलती है। धीरे-धीरे संतों का संग होगा, सत्संग में रूचि होने लगेगी। संतों का संग हमें पकड़-पकड़कर भगवान के ध्यान में ले जाता है।

एक बार का सत्संग दूसरी बार और दूसरी बार का सत्संग तीसरी बार सत्संग करा देता है। ऐसा करते-करते संतों का संग करने वाले एक दिन स्वयं संत के अनुभव को अपना अनुभव बना लेने में सफल हो जाते हैं। संतों की पहुँच … इस पृथ्वी को तो छोड़ो, ऐसी कई पृथ्वियों, कई सूर्य एवं उसके भी आगे अत्यन्त सूक्ष्म जो परमात्मा है, जहाँ मन और वाणी जा नहीं सकती, अविनाशी आत्मा तक होती है। यदि हमें उनके संग

का रंग लग जाये तो फिर हम किसी भी लोक-लोकान्तर में हों, सत्संग के संस्कार हमें उन्नति की राह पर ले ही जायेंगे।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध |
कबीर संगत साधु की, कटै कोटि अपराध ||
संगत कीजै साधु की, कभी न निष्फल होय।
लोहा पारस परसते, सो भी कंचन होय॥

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bl57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम सुनेंगे पूज्य बापूजी की अमृतमयी वाणी ...

देश का राजा कैसा होना चाहिए ?

https://youtu.be/YDA65ERM-To

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- राजा चक्ववेण कैसे राजा थे?
- राजा चक्ववेण की रानी क्यों दुखी हो गई?
- राजा चक्ववेण को रावण से कर लेने की जरूरत क्यों पड़ी?
- मंत्री के किस व्यवहार से रावण घबरा गया और उसने कर दे दिया?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
- निगुरे लोगों के संग से क्या हानी होती है?
- कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन।
  जैसी संगति बैठिए, तैसो ही फल दिन। इस दोहे को याद करके सुनाओ ।
- आज के सत्संग से आपको क्या सीख मिलती है?

14. पूर्णाहूति :-

<u>**दीपज्योति एवं आरती**</u>

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,

तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । **[C]** अहिल्या

****